प्रारंभिक परीक्षा

भारत की पहली अर्ध-बैलिस्टिक मिसाइल – प्रलय

संदर्भ

DRDO गणतंत्र दिवस परेड में पारंपरिक हमलों के लिए **भारत की पहली कम दूरी की अर्ध-बैलिस्टिक मिसाइल "प्रलय"** का प्रदर्शन करेगा।

प्रलय के बारे में -

- **प्रकार**: स्वदेशी, कम दूरी की, अर्ध-बैलिस्टिक मिसाइल।
- **रेंज: 400 किलोमीटर तक**, जो इसे नियंत्रण रेखा(LOC) और वास्तविक नियंत्रण रेखा(LAC) दोनों पर तैनाती के लिए उपयुक्त बनाता है।
- यह एक ठोस प्रणोदक रॉकेट मोटर द्वारा संचालित है और पारंपरिक हथियार ले जाने में सक्षम है।
- **प्रलय**, **ब्रह्मोस** और **प्रहार मिसाइलों की पूरक है**, जो पहले से ही भारतीय मिसाइल सूची में शामिल हैं।
- **वैश्विक उदाहरण:** रूस का इस्कंदर-M और चीन का डोंग फेंग-12a

अर्ध-बैलिस्टिक मिसाइलें(**Quasi - Ballistic Missiles**) -

- **इसमें पारंपरिक बैलिस्टिक मिसाइलों और क्रूज मिसाइलों की विशेषताएं सम्मिलित हैं।**
- उच्च-आर्किंग प्रक्षेपवक्र का अनुसरण करने वाली शुद्ध बैलिस्टिक मिसाइलों के विपरीत, **अर्ध-बैलिस्टिक मिसाइलें:**
  - अपने पथ को समायोजित करने के लिए उड़ान के बीच में मनुवर(**Maneuver**) करती है।
  - आम तौर पर कम ऊंचाई पर उड़ती हैं**,** जिससे उनका पता लगाना और रोकना कठिन हो जाता है।
- **मुख्य विशेषताएं**
  - **गति**: उच्च गति पर यात्रा, अक्सर हाइपरसोनिक रेंज में (मैक 5 या उससे अधिक)।
  - **स्टेल्थ क्षमता(Stealth capacity):** मानक बैलिस्टिक मिसाइलों की तुलना में मिसाइल रक्षा प्रणालियों से अधिक प्रभावी ढंग से बच सकती है।
  - **सटीकता**(**Precision**): अधिक सटीकता के लिए डिज़ाइन किया गया, जो उन्हें लक्षित हमलों के लिए आदर्श बनाता है।

स्रोत: **The Hindu - Pralay**

नीति आयोग का पहला राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (FHI)

संदर्भ

नीति आयोग की पहली राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक रिपोर्ट 16वें वित्त आयोग के अध्यक्ष डॉ. अरविंद पनगढ़िया द्वारा जारी की गई।

राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (FHI) के बारे में -

- **FHI का उद्देश्य प्रमुख वित्तीय मापदंडों के आधार पर भारतीय राज्यों के राजकोषीय स्वास्थ्य का मूल्यांकन करना है, तथा उनकी राजकोषीय स्थिरता, राजस्व सृजन और व्यय की गुणवत्ता के बारे में जानकारी प्रदान करना है।**
- FHI पांच उप-सूचकांकों - व्यय की गुणवत्ता, राजस्व संग्रहण, राजकोषीय विवेकशीलता, ऋण सूचकांक और ऋण स्थिरता - का उपयोग करके राज्यों का मूल्यांकन करता है।
- **दायरा**: भारत की जीडीपी, जनसांख्यिकी और सार्वजनिक व्यय में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले **18 प्रमुख राज्यों को शामिल करता है।**

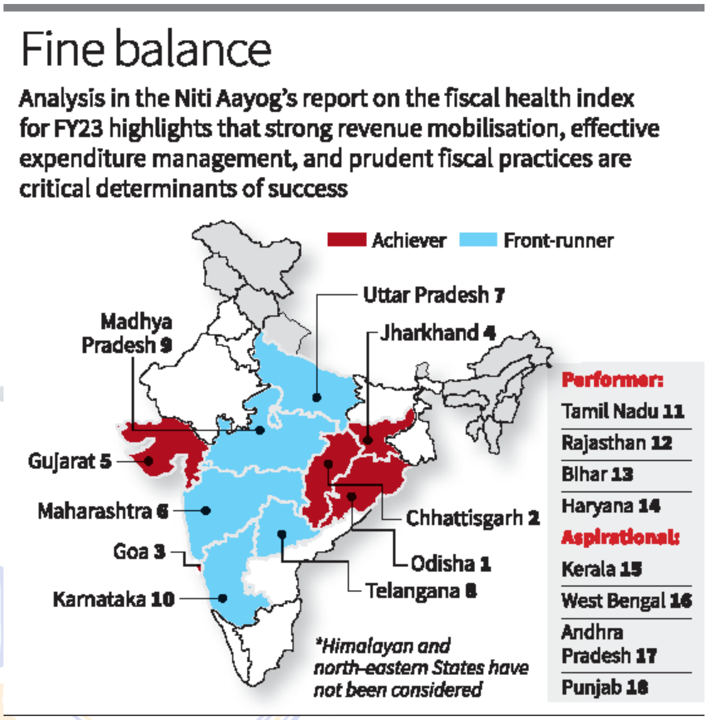

रिपोर्ट में राज्यों की श्रेणियाँ -

- **अचीवर्स**(**Achievers**) **(सर्वोच्च प्रदर्शन करने वाले राज्य):** ओडिशा, छत्तीसगढ़, गोवा और झारखंड।
    - **पूंजीगत परिव्यय**: सकल राज्य घरेलू उत्पाद (जीएसडीपी) का 4% तक।
    - **राजस्व अधिशेष**: प्रभावी गैर-कर राजस्व जुटाना।
    - **कम ब्याज भुगतान**: राजस्व प्राप्तियों का केवल 7% तक।
    - **शीर्ष राज्य**: 67.8 के उच्चतम समग्र सूचकांक स्कोर के साथ ओडिशा।
    - **ऋण रैंकिंग**: ओडिशा ऋण सूचकांक (99.0) और ऋण स्थिरता (64.0) रैंकिंग दोनों में शीर्ष पर है।
- **फ्रंट-रनर्स(Front-runners):** महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, तेलंगाना, मध्य प्रदेश, कर्नाटक।
    - **विकासात्मक व्यय**: कुल व्यय का 73%।
    - **कर राजस्व वृद्धि**: स्वयं के कर राजस्व में लगातार वृद्धि।
    - **राजकोषीय प्रबंधन**: 24% के बेहतर ऋण-से-जीएसडीपी अनुपात के साथ संतुलित राजकोषीय प्रबंधन।
- **परफॉर्मर्स(Performers):** तमिलनाडु, बिहार, राजस्थान और हरियाणा।
    - कुछ राजकोषीय प्रबंधन चुनौतियों के साथ मध्यम प्रदर्शन।
- **एस्पिरेशनल स्टेट्स(Aspirational States)(सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले राज्य):** पंजाब, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और केरल।
    - **कम राजस्व जुटाना**: राजकोषीय और राजस्व घाटे के लक्ष्य को पूरा करने के लिए संघर्ष करना।
    - **ऋण मुद्दे:** बढ़ते ऋण बोझ को देखते हुए, ऋण स्थिरता एक महत्वपूर्ण चिंता का विषय है।

- **राज्य-विशिष्ट मुद्दे:**
    - **केरल और पंजाब**: व्यय की खराब गुणवत्ता और कमजोर ऋण स्थिरता।
    - **पश्चिम बंगाल**: कम राजस्व संग्रहण और ऋण सूचकांक स्कोर से संबंधित समस्याएं।
    - **आंध्र प्रदेश**: उच्च राजकोषीय घाटा।

स्रोत: The Hindu - Odisha tops NITI fiscal health index

इसरो का 100वां प्रक्षेपण: GSLV-F15 और NVS-02

संदर्भ

GSLV-F15 NVS-02 मिशन **श्रीहरिकोटा से इसरो का 100वां प्रक्षेपण है,** जिसमें **उन्नत क्षेत्रीय नेविगेशन के लिए उन्नत परमाणु घड़ियों और L1 आवृत्ति से लैस दूसरी पीढ़ी के NAVIC उपग्रह को प्रक्षेपित** किया गया है।

NavIC (नेविगेशन विथ इंडियन कॉन्स्टेलशन) के बारे में -

- **भारत की क्षेत्रीय नेविगेशन उपग्रह प्रणाली, सटीक स्थिति वेग और समय (PVT) सेवाएं प्रदान करती है।**
- **कवरेज**: **भारतीय मुख्य भूमि और** भारतीय भूभाग **से 1,500 किमी. आगे** तक।
- **दो प्रकार की सेवाएं प्रदान करता है:**
    - **स्टैंडर्ड पोजिशनिंग सर्विस**(**SPS**): आम जनता के उपयोग के लिए।
    - **रिस्ट्रिक्टेड सर्विस**(**RS**): रक्षा और सरकारी एजेंसियों सहित अधिकृत उपयोगकर्ताओं के लिए।

NAVIC की विशेषताएं:

- **स्थिति निर्धारण सटीकता:** 20 मीटर से बेहतर।
- **समय सटीकता: 40 नैनोसेकंड** से बेहतर
- **उपग्रह समूह याकॉन्स्टेलशन**:
    - **2013-2018 के बीच शुरुआत में 7 उपग्रह लॉन्च किए गए।**
    - 10 साल के मिशन जीवन के लिए डिज़ाइन किया गया था, लेकिन कुछ उपग्रहों को ऑनबोर्ड परमाणु घड़ियों के साथ समस्याओं के कारण शीघ्र प्रतिस्थापन की आवश्यकता थी।

परमाणु घड़ी

- **परमाणु घड़ी समय को अत्यधिक सटीकता के साथ रखने के लिए परमाणुओं (आमतौर पर सीज़ियम या रूबिडियम) की गुंजयमान आवृत्ति की निगरानी करके समय को मापती है।**
- एक उपग्रह-आधारित पोजिशनिंग सिस्टम बोर्ड पर लगी परमाणु घड़ियों का उपयोग करके किसी सिग्नल के आने और वापस आने में लगने वाले समय को सटीक रूप से मापकर वस्तु का स्थान निर्धारित करता है।
- परमाणु घड़ियों की विफलता की स्थिति में उपग्रह अब सटीक स्थान प्रदान करने में सक्षम नहीं होंगे।

- **दूसरी पीढ़ी के उपग्रह:**
  - आधार परत को बढ़ाने के लिए कुल 5 उपग्रहों (NVS-01 से NVS-05) की योजना बनाई गई है।
  - NVS-01 को मई 2023 में लॉन्च किया गया था।
  - NVS-02 को अब सटीकता और विश्वसनीयता में सुधार के लिए लॉन्च किया जा रहा है।
  - नए उपग्रह L1 आवृत्ति से सुसज्जित हैं, जो स्मार्टफोन और फिटनेस ट्रैकर जैसे छोटे उपकरणों के लिए प्रयोज्यता को बढ़ाते हैं।
- **NAVIC बनाम GPS**:
  - **NavIC**: क्षेत्रीय कवरेज (भारत + 1,500 किमी)।
  - **GPS**: वैश्विक कवरेज।
  - **NavIC भारत के भीतर बेहतर सटीकता प्रदान करता है और विदेशी प्रणालियों से स्वतंत्र है, जिससे रणनीतिक स्वायत्तता सुनिश्चित होती है।**

NavIC के समक्ष चुनौतियाँ -

- **परमाणु घड़ियों में खराबी:** उपग्रहों का मिशन जीवन समाप्त होने से पहले उनका प्रतिस्थापन आवश्यक हो गया।
- **IRNSS-1H** लॉन्च की विफलता: लॉन्च के दौरान हीट शील्ड की खराबी के कारण तैनाती में बाधा आई।
- **कम उपयोग**:
  - 2018 CAG रिपोर्ट ने उपयोगकर्ता रिसीवर्स के विकास में देरी पर प्रकाश डाला।
  - 2006 में फंडिंग की मंजूरी के बावजूद, रिसीवर्स पर काम 2017 में ही शुरू हुआ।
  - देरी के कारण उपग्रह मिशन के वर्षों का समय बर्बाद हुआ।

यूपीएससी पीवाईक्यू

प्रश्न: निम्नलिखित में से किस देश के पास अपना स्वयं का सैटेलाइट नेविगेशन सिस्टम है? (2023)

(a) ऑस्ट्रेलिया
(b) कनाडा
(c) इजराइल
(d) जापान

उत्तरः (**d**)

स्रोत: [The Hindu - ISRO gearing up for its 100th launch from Sriharikota]

एल्गोरिदमिक मूल्य निर्धारण(Algorithmic Pricing)

संदर्भ

केंद्रीय उपभोक्ता संरक्षण प्राधिकरण (CCPA) ने एंड्रॉयड और आईओएस डिवाइसों पर दिखाए गए किराए में कथित विसंगतियों के संबंध में ओला और उबर को नोटिस जारी किया है।

एल्गोरिथमिक मूल्य निर्धारण के बारे में -

- यह बिक्री हेतु वस्तुओं के मूल्य स्वचालित रूप से निर्धारित करने की एक विधि है।
- **यह डेटा का विश्लेषण करने और किसी उत्पाद के लिए कितना शुल्क लिया जाए, इस बारे में पूर्वानुमान लगाने के लिए एल्गोरिदम का उपयोग करता है। इसका लक्ष्य मुनाफ़े को अधिकतम करना है।**
- किराया वास्तविक समय की स्थितियों जैसे ट्रैफ़िक, मांग और बुकिंग के समय से प्रभावित होता है।

मूल्य निर्धारण एल्गोरिदम में संभावित कारक -

- **उपयोगकर्ता विशेषताएँ:**
  - डिवाइस का प्रकार (आईफोन बनाम एंड्रॉइड)।
  - आयु, स्थान, ब्राउज़िंग इतिहास और भुगतान विधियाँ (जैसे, क्रेडिट कार्ड का उपयोग)।
- **उपभोक्ता व्यवहार ट्रैकिंग**:
  - माउस की गतिविधियों, शॉपिंग कार्ट में न खरीदी गई वस्तुओं और सटीक स्थान डेटा पर नज़र रखना।
- **नेबरहुड डेटा**:
  - जॉर्ज वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी के 2020 के एक अध्ययन में पाया गया कि राइड-हेलिंग कंपनियां उच्च जातीय अल्पसंख्यक आबादी वाले पड़ोस में शुरू या समाप्त होने वाली यात्राओं के लिए प्रति मील अधिक किराया वसूलती हैं**,** हालांकि उबर और लिफ़्ट जैसी कंपनियों ने इससे इनकार किया है।

स्रोत: Indian Express - Ola Uber

भारत यूरोड्रोन कार्यक्रम में शामिल हुआ

संदर्भ

भारत आधिकारिक तौर पर एक पर्यवेक्षक राज्य के रूप में **MALE RPAS (मीडियम-एल्टीट्यूड लॉन्ग-एंड्योरेंस रिमोटली पायलटेड एयरक्राफ्ट सिस्टम) कार्यक्रम में शामिल** हो गया है, जिसे "**यूरोड्रोन कार्यक्रम" के रूप में भी जाना जाता है।**

यूरोड्रोन(Eurodrone) के बारे में

- **यह भविष्य की मानवरहित विमान प्रणाली (UAS) आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक संयुक्त यूरोपीय पहल है।**
- यह यूरोप की सामूहिक रक्षा रणनीति का हिस्सा है, जो रीपर और हेरॉन ड्रोन जैसे अमेरिकी और इजरायली प्लेटफार्मों पर निर्भरता को कम करता है।
- **भाग लेने वाले राष्ट्र**:
  - **मुख्य सदस्य:** जर्मनी, फ्रांस, इटली और स्पेन।
  - **अग्रणी राष्ट्र**: जर्मनी।
  - **पर्यवेक्षक राज्य**: जापान (नवंबर 2023 में शामिल) और भारत (जनवरी 2025 में शामिल)।
- **भारत का प्रतिनिधित्व DRDO की एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट (ADE) द्वारा किया जाएगा।**
- **विशेषताएँ:**
  - यह ट्विन-इंजन कॉन्फ़िगरेशन से लैस है।
  - इसे गंभीर मौसम स्थितियों सहित विविध वातावरणों में संचालन के लिए डिज़ाइन किया गया है।
  - ड्रोन के 2030 तक सेवा में आने की उम्मीद है
- **मिशन क्षमताएं**:
  - वैश्विक स्तर पर ISTAR (खुफिया, निगरानी, लक्ष्य प्राप्ति और टोही) मिशनों को समर्थन देने के लिए डिज़ाइन किया गया।
  - नागरिक और सैन्य दोनों हवाई क्षेत्रों में संचालन के लिए उपयुक्त।

स्रोत: [The Print - India joins €7.1 bn Eurodrone as observer]

ग्लोबल प्लास्टिक एक्शन पार्टनरशिप(Global Plastic Action Partnership)

संदर्भ

अंगोला, बांग्लादेश, गैबॉन, ग्वाटेमाला, केन्या, सेनेगल और तंजानिया सहित सात नए सदस्य GPAP में शामिल हो गए हैं।

ग्लोबल प्लास्टिक एक्शन पार्टनरशिप (GPAP) के बारे में -

- **इसे दुनिया भर में प्लास्टिक प्रदूषण से निपटने के लिए 2018 में विश्व आर्थिक मंच (WEF) के सतत विकास प्रभाव शिखर सम्मेलन के दौरान लॉन्च किया गया था।**
- यह प्लास्टिक के लिए एक चक्रीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने, प्लास्टिक कचरे के पर्यावरणीय प्रभावों को कम करने के लिए पुन: उपयोग, पुनर्चक्रण और टिकाऊ प्रबंधन पर जोर देने पर केंद्रित है।
- यह देशों को अपशिष्ट प्रबंधन के लिए राष्ट्रीय कार्य रोडमैप और निवेश गतिशीलता विकसित करने में मदद करता है।
- **सदस्य**: 25 (भारत से महाराष्ट्र राज्य सहित)
- **2024 में भारत दुनिया का सबसे बड़ा प्लास्टिक उत्सर्जक देश बन गया।**

स्रोत: WEF - 25 Countries Unite in the Fight Against Plastic Pollution

तमिलनाडु के लौह युग की उत्पत्ति वैश्विक समयरेखा को 2,000 वर्ष पीछे ले जाती है

संदर्भ

एक हालिया अध्ययन से पता चला है कि **तमिलनाडु में लोहे का उपयोग 3345 ईसा पूर्व से शुरू हुआ था, जो इसे विश्व स्तर पर लौह प्रौद्योगिकी का सबसे पुराना ज्ञात साक्ष्य बनाता है।**

मुख्य निष्कर्ष और दावों के बारे में -

- **'लोहे की प्राचीनता:** तमिलनाडु से हाल की रेडियोमेट्रिक तिथियाँ' शीर्षक वाला यह अध्ययन **एक्सेलेरेटर मास स्पेक्ट्रोमेट्री(AMS)** और **ऑप्टिकली स्टिम्युलेटेड ल्यूमिनेसेंस(OSL)** जैसी उन्नत डेटिंग तकनीकों पर आधारित था।
- इन विधियों का उपयोग तमिलनाडु के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त नमूनों की तिथि निर्धारण के लिए किया गया।
- **उन्नत धातुकर्म तकनीकें**:
    - **अध्ययन में कोडुमानल जैसी जगहों पर तीन प्रकार की लोहा गलाने वाली भट्टियां पाई गईं।**
    - ये भट्टियां 1300 डिग्री सेल्सियस के तापमान तक पहुंच सकती हैं, जो स्पंज आयरन का उत्पादन करने के लिए पर्याप्त है - प्रारंभिक लौह उत्पादन के लिए एक उन्नत विधि।
- **लौह युग बनाम ताम्र युग**:
    - अध्ययन में प्रस्तावित किया गया है कि **जबकि विंध्य के उत्तर के क्षेत्र अभी भी ताम्र युग में थे, दक्षिणी भारत, विशेष रूप से तमिलनाडु, पहले ही लौह युग में प्रवेश कर चुका था।**

The findings provide evidence that iron technology in Tamil Nadu dates as far back as 3345 BCE

- **सिंधु घाटी के साथ सांस्कृतिक संबंध:**
    - तमिलनाडु में 140 स्थलों पर पाए गए 90% से अधिक भित्तिचित्र चिह्न सिंधु घाटी सभ्यता से मिलते जुलते हैं, जो दोनों क्षेत्रों के बीच संभावित सांस्कृतिक संबंधों का सुझाव देते हैं।
- **वैश्विक प्रभाव**:
    - **यह खोज पिछली धारणा को चुनौती देती है कि अनातोलिया (आधुनिक तुर्की) में हित्ती साम्राज्य 1300 ईसा पूर्व के आसपास लोहे का उपयोग करने वाला पहला साम्राज्य था।**
    - तमिलनाडु के निष्कर्षों से पता चलता है कि इस क्षेत्र में लौह प्रौद्योगिकी पहले की तुलना में लगभग 2,000 वर्ष पुरानी है।

प्रमुख स्थल और निष्कर्ष:

- **शिवगलाई**: यहां खुदाई से चाकू, कुल्हाड़ी और तलवार जैसी 85 लोहे की वस्तुएं मिलीं। रेडियोकार्बन डेटिंग से 3345 ईसा पूर्व में लोहे के उपयोग का पता चला।
- **मयिलाडुम्पराई**: इस साइट के नमूने 2172 ईसा पूर्व के थे, जो प्रारंभिक लोहे के उपयोग के अतिरिक्त सबूत प्रदान करते हैं।
- **किल्नामंडी**: यहां पाया गया एक ताबूत दफन 1692 ईसा पूर्व का था।
- **आदिचनल्लूर**: 2517 ईसा पूर्व की लोहे की वस्तुएं चारकोल के साथ पाई गईं, जो धातु विज्ञान की एक दीर्घकालिक परंपरा का संकेत देती हैं।

स्रोत: Indian Express - Iron age began in TN

समाचार संक्षेप में

स्पाइनल मस्कुलर अट्रोफी (Spinal Muscular Atrophy-SMA)

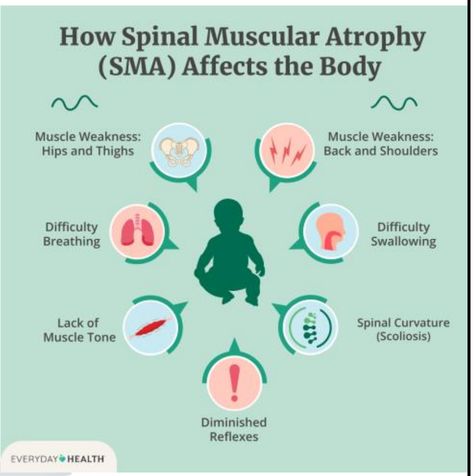

- **यह एक आनुवांशिक विकार है जो कमजोर मांसपेशियों का कारण बनता है क्योंकि उन्हें नियंत्रित करने वाली नसें ठीक से काम करना बंद कर देती हैं।**
- **मोटर न्यूरॉन्स** कहलाने वाली ये नसें रीढ़ की हड्डी में पाई जाती हैं और गति के लिए मस्तिष्क से मांसपेशियों तक संकेत भेजने में मदद करती हैं।

SMA का क्या कारण है?

- **SMA, SMN1 नामक जीन में एक समस्या (उत्परिवर्तन) के कारण होता है, जो मोटर न्यूरॉन्स को स्वस्थ रखने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रोटीन का उत्पादन करता है।**
- **जब शरीर में इस प्रोटीन का पर्याप्त मात्रा में निर्माण नहीं होता, तो मोटर न्यूरॉन्स मर जाते हैं, और मांसपेशियां समय के साथ कमजोर हो जाती हैं।**
- यह बीमारी माता-पिता दोनों से विरासत में मिलती है। अगर माता-पिता दोनों ही दोषपूर्ण जीन के वाहक हैं, तो उनके बच्चे को SMA होने की 25% संभावना है।

स्रोत: The Hindu - ‘People with spinal muscular atrophy need Centre’s help’

धनुरी वेटलैंड

- **एनजीटी ने उत्तर प्रदेश सरकार को निर्देश दिया है कि वह जेवर हवाई अड्डे के पास स्थित धनौरी वेटलैंड को वेटलैंड के रूप में अधिसूचित करने के संबंध में 4 सप्ताह के भीतर विस्तृत स्थिति रिपोर्ट प्रदान करे।**
- **यह उत्तर प्रदेश के गौतम बुद्ध नगर जिले के ग्रेटर नोएडा में स्थित है।**
- यह 150 सारस क्रेन (उत्तर प्रदेश का राज्य पक्षी) सहित 217 पक्षी प्रजातियों का घर है।
- इसे बर्डलाइफ इंटरनेशनल द्वारा एक महत्वपूर्ण पक्षी क्षेत्र (आईबीए) के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- चरम प्रवासी मौसम (नवंबर से मार्च) के दौरान, आर्द्रभूमि 50,000 से अधिक जलपक्षियों की मेजबानी करती है।
- **यह यमुना बेसिन के बाढ़ क्षेत्र के भीतर स्थित है।**

तथ्य

- **उत्तर प्रदेश में रामसर स्थल (10):** बखिरा अभयारण्य, हैदरपुर वेटलैंड, नवाबगंज पक्षी अभयारण्य, पार्वती अरगा पक्षी अभयारण्य, समान पक्षी अभयारण्य, समसपुर पक्षी अभयारण्य, सांडी पक्षी अभयारण्य, सरसई नावर झील, सुर सरोवर और ऊपरी गंगा नदी।
- **भारत में सबसे अधिक रामसर साइटें तमिलनाडु में हैं - 18।**

स्रोत: The Hindu – NGT

हलवा समारोह

- **हाल ही में, केंद्रीय वित्त मंत्री ने केंद्रीय बजट 2025-26 की तैयारी के अंतिम चरण को चिह्नित करते हुए पारंपरिक 'हलवा' समारोह में भाग लिया।**

- यह समारोह एक वार्षिक अनुष्ठान है जिसमें पारंपरिक मिठाई का हलवा तैयार किया जाता है और वित्त मंत्रालय के अधिकारियों और कर्मचारियों को परोसा जाता है जो बजट की तैयारी में शामिल होते हैं।
- यह केंद्र सरकार के बजट दस्तावेजों की तैयारी में शामिल अधिकारियों के लिए एक तरह की विदाई है।
- **इसके बाद वे "लॉक-इन अवधि" में प्रवेश करते हैं, जिसके दौरान वे बजट दस्तावेजों के आसपास गोपनीयता बनाए रखने की दृष्टि से बाहरी दुनिया से कटे हुए नॉर्थ ब्लॉक के बेसमेंट में रहते हैं।**
- बजट 2025 को पहले के कुछ पूर्ण केंद्रीय बजटों की तरह ही कागज रहित प्रारूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

स्रोत: **Indian Express - Halwa ceremony commences**

संपादकीय सारांश

ट्रम्प 2.0 और ईरान

संदर्भ

डोनाल्ड ट्रम्प के राष्ट्रपति बनने के बाद से मध्य पूर्व की स्थिति में काफ़ी बदलाव आया है। अरब-ईरान संबंधों की गतिशीलता बदल गई है, जिससे तेहरान और वाशिंगटन के बीच जुड़ाव के अवसर पैदा हुए हैं।

अमेरिका-ईरान संबंधों में महत्वपूर्ण परिवर्तन

- **ईरान का उभरता राजनीतिक परिदृश्य:**
  - ईरान महत्वपूर्ण नेतृत्व परिवर्तन से गुज़रा है। राष्ट्रपति इब्राहिम रईसी के नेतृत्व में कट्टरपंथी नेतृत्व को आंतरिक आर्थिक संघर्ष और सामाजिक अशांति का सामना करना पड़ा।
  - **मसूद पेज़ेशकियान में परिवर्तन:** मई 2024 में रईसी की मृत्यु के साथ, उनके उत्तराधिकारी, मसूद पेज़ेशकियान ने सैन्य क्षमताओं, विशेष रूप से परमाणु संवर्धन पर एक मजबूत रुख बनाए रखते हुए, प्रतिबंध हटाने के लिए पश्चिम के साथ जुड़ने पर जोर दिया।
- **राजनयिक बदलाव**:
  - ईरान के नेतृत्व ने नए अमेरिकी प्रशासन से अधिक "तर्कसंगत" दृष्टिकोण की आशा व्यक्त की, क्योंकि वे क्षेत्रीय स्थिरता और परमाणु समझौते में वापसी चाहते हैं। हालाँकि, उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि ईरान कमज़ोर नहीं दिखेगा।
  - पहले ट्रम्प प्रशासन (जैसे कि पूर्व राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार) से प्रमुख तेजतर्रार शख्सियतों की अनुपस्थिति को संभावित राजनयिक जुड़ाव के लिए एक सकारात्मक संकेत के रूप में देखा जाता है।

ट्रम्प के प्रथम कार्यकाल के बाद से क्षेत्रीय परिवर्तन

- **अरब-ईरान संबंधों में सुधार**:
  - 2023 से, सऊदी अरब और ईरान ने चीन की मध्यस्थता के साथ अपने संबंधों को बेहतर बनाने पर काम किया है। सऊदी अरब के युवराज ने क्षेत्रीय गतिशीलता में बदलाव का संकेत देते हुए अपने संबंधों में एक ऐतिहासिक मोड़ स्वीकार किया है।
  - सऊदी अरब सहित अरब राज्य क्षेत्रीय स्थिरता और आर्थिक विविधीकरण को प्राथमिकता दे रहे हैं। ईरान के साथ जुड़ने में अरब देशों के बीच सहजता बढ़ रही है, जैसा कि गाजा में इजरायली कार्रवाई की निंदा करने जैसी संयुक्त राजनयिक कार्रवाइयों में परिलक्षित होता है।
- **मध्य पूर्व में बदलते संघर्ष**:
  - **सीरिया, लेबनान और इराक**: इन देशों की स्थिति ने ईरान के प्रति अरब देशों के रुख को नरम कर दिया है। उदाहरण के लिए, सीरियाई शासन के पतन और **हिजबुल्लाह जैसे समूहों के कमजोर पड़ने** से अरब-ईरान सहयोग के नए अवसर पैदा हुए हैं।
- **इजराइल का प्रभाव:**
  - इजरायल का प्रभाव ईरान के प्रति अमेरिकी नीति को आकार देना जारी रखता है। हालांकि, अरब देश इजरायल की आक्रामकता का विरोध करने में तेजी से मुखर हो रहे हैं, खासकर गाजा में।
  - **2024 के अरब-इस्लामिक शिखर सम्मेलन में, एमबीएस ने** ईरान पर हमला करने के खिलाफ इजरायल को आगाह किया, जिससे ईरान की क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए अरब का समर्थन प्रदर्शित हुआ।

अमेरिका-ईरान संबंधों को प्रभावित करने वाले कारक

- **अधिकतम दबाव बनाम कूटनीति:**

- ट्रंप प्रशासन को प्रतिबंधों और सैन्य दबाव के पक्षधर अपने आक्रामक लोगों और ईरान के प्रति कूटनीतिक दृष्टिकोण की वकालत करने वाले अन्य नियुक्तियों के बीच दुविधा का सामना करना पड़ रहा है। यह विरोधाभास अमेरिका के दूसरे कार्यकाल में अपनाए जाने वाले दृष्टिकोण को प्रभावित करेगा।

- **प्रतिबंध और तेल बाज़ार**:
  - ईरान पर अमेरिकी प्रतिबंध, खास तौर पर तेल निर्यात से संबंधित, वैश्विक ऊर्जा बाजारों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। इन प्रतिबंधों को कम किया जा सकता है, जैसा कि बिडेन प्रशासन के तहत देखा गया है, और यह गतिशीलता ईरान पर अमेरिकी निर्णयों को प्रभावित करना जारी रखेगी।
- **क्षेत्र में अमेरिकी सैन्य उपस्थिति**:
  - अमेरिका और ईरान के बीच सहयोग का एक संभावित क्षेत्र इराक से अमेरिकी सैनिकों की पूरी तरह वापसी हो सकता है, जो ईरान की विदेशी सेनाओं को बाहर निकालने की इच्छा और ट्रम्प के हस्तक्षेप-विरोधी रुख दोनों के साथ मेल खाता है। यह एक ऐसा क्षेत्र हो सकता है जहाँ दोनों पक्ष समान आधार पा सकते हैं।
- **अरब राज्य प्रमुख अभिकर्ता के रूप में**:
  - अरब देश, खास तौर पर सऊदी अरब, ईरान के साथ अपने संबंधों को क्षेत्रीय स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। ये देश उम्मीद करते हैं कि अमेरिका ईरान के साथ उनके संबंधों का समर्थन करेगा और साथ ही मध्य पूर्व में नई वास्तविकताओं को भी पहचानेगा।

स्रोत: **Indian Express - Trump 2.0 & Iran**

विस्तृत कवरेज

भारत-इंडोनेशिया संबंध

संदर्भ

इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबिआंतो नई दिल्ली के 76वें गणतंत्र दिवस समारोह से पहले भारत पहुंचे, जहां वह मुख्य अतिथि के रूप में काम करेंगे।

ऐतिहासिक संदर्भ

- **गहरे संबंध:** भारत और इंडोनेशिया इतिहास, धर्म (हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म) और सांस्कृतिक आदान-प्रदान में समानताएं साझा करते हैं।
- **राजनयिक संबंधों की स्थापना:** औपचारिक राजनयिक संबंध 1950 में स्थापित किये गये, जिसके बाद **1951 में मैत्री संधि हुई।**
    - इसके अलावा दोनों देश गुटनिरपेक्ष आंदोलन (**NAM)** के संस्थापक सदस्य थे।
- **सामरिक साझेदारी तक उन्नयन:** इस संबंध को 2005 में सामरिक साझेदारी तक उन्नत किया गया, तथा **2018 में इसे व्यापक सामरिक साझेदारी तक उन्नत किया गया, जिसमें** आर्थिक और सुरक्षा सहयोग पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- **एक्ट ईस्ट नीति:** इंडोनेशिया 2014 में अपनी स्थापना के समय से ही एक्ट ईस्ट नीति का हिस्सा रहा है।

साझेदारी क्षेत्र

- **व्यापार और आर्थिक संबंध:**
    - **व्यापार मात्रा**: भारत और इंडोनेशिया के बीच 30 बिलियन डॉलर का व्यापार है, जिसमें प्रचुर अप्रयुक्त क्षमता है।
    - **इंडोनेशिया की आर्थिक ताकत**: इसकी जीडीपी 1.4 ट्रिलियन डॉलर है। यह प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है, जिसमें पाम ऑयल, कोयला और रबर शामिल हैं जो भारत के लिए महत्वपूर्ण हैं।
    - **इंडोनेशिया आसियान में भारत का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है।**

- ○ भारतीय कंपनियों ने इंडोनेशिया में खनन, कपड़ा और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में **1.56 अरब डॉलर से अधिक का निवेश किया है।**
- **समुद्री सुरक्षा और हिंद-प्रशांत सहयोग:**
  - ○ **सामरिक महत्व**: हजारों द्वीपों वाला एक विशाल द्वीपसमूह राज्य होने के नाते इंडोनेशिया हिंद और प्रशांत महासागर के बीच एक सेतु का काम करता है।
  - ○ **समुद्री संचार लाइनें (एसएलओसी)**: इंडोनेशियाई जलमार्ग पूर्वी एशिया, भारत, अफ्रीका और यूरोप के बीच वैश्विक व्यापार के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- **हिन्द-प्रशांत सहयोग**:
  - ○ इंडोनेशिया ने इंडो-पैसिफिक पर अपने आसियान आउटलुक(एओआईपी) को भारत के इंडो-पैसिफिक महासागर पहल (आईपीओआई) के साथ जोड़ दिया है।
  - ○ दोनों देश आईपीओआई ढांचे के तहत समुद्री संसाधनों पर मिलकर काम कर रहे हैं।
- **रक्षा एवं सामरिक सहयोग:**
  - ○ **संयुक्त सैन्य अभ्यास:** गरुड़ शक्ति (सेना), समुद्र शक्ति (नौसेना) और समन्वित गश्त (इंड-इंडो कॉर्पेट) जैसे अभ्यास।
  - ○ **रक्षा उद्योग सहयोग:** 2024 में भारत-इंडोनेशिया रक्षा उद्योग प्रदर्शनी का उद्घाटन।
- **बहुपक्षीय सहभागिता:**
  - ○ **ब्रिक्स सदस्यता**: इंडोनेशिया 2023 में ब्रिक्स में शामिल हो गया। यह भारत और इंडोनेशिया को वैश्विक मुद्दों पर सहयोग करने के लिए एक मंच प्रदान करता है।
  - ○ **क्षेत्रीय संरचना**: दोनों देश आसियान से संबंधित मंचों, जैसे पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (ईएएस) और आसियान क्षेत्रीय मंच (एआरएफ) में भाग लेते हैं।
- **सांस्कृतिक एवं शैक्षिक सहभागिता:**
  - ○ भारत जकार्ता और बाली में दो सांस्कृतिक केंद्र संचालित करता है, जो योग, शास्त्रीय नृत्य और संगीत को बढ़ावा देते हैं।
  - ○ भारत, भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आईटीईसी) कार्यक्रम तथा भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (आईसीसीआर) के माध्यम से इंडोनेशियाई छात्रों को बड़ी संख्या में छात्रवृत्तियां प्रदान करता है।
  - ○ भारत और इंडोनेशिया के विश्वविद्यालय संयुक्त अनुसंधान परियोजनाओं, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और छात्र विनिमय कार्यक्रमों पर सहयोग कर रहे हैं।

द्विपक्षीय संबंधों में चुनौतियाँ

- **चीन पर भिन्न दृष्टिकोण:**
  - ○ **इंडोनेशिया की संतुलित नीति**: इंडोनेशिया चीन के साथ मजबूत आर्थिक संबंध रखता है और प्रमुख शक्तियों के साथ संतुलित संबंधों की उसकी परंपरा रही है।
  - ○ **संरेखण चुनौतियां**: जबकि भारत चीन के रणनीतिक इरादों के प्रति सतर्क है, इंडोनेशिया का चीन के प्रति दृष्टिकोण कम प्रतिकूल है।
- **सीमित व्यापार और निवेश:**
  - ○ **कम द्विपक्षीय व्यापार**: दोनों देशों के आकार और आर्थिक क्षमता को देखते हुए 30 बिलियन डॉलर का व्यापार मात्रा कम है। चीन के साथ इंडोनेशिया का व्यापार मात्रा (2023 में **$**139 बिलियन)
  - ○ प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढांचे और ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में व्यापार को बढ़ावा देने के प्रयास सीमित हैं।
- **कनेक्टिविटी संबंधी समस्याएं:**
  - ○ भौगोलिक निकटता के बावजूद, भारत और इंडोनेशिया के बीच भौतिक और डिजिटल संपर्क अविकसित है, जिससे व्यापार और पर्यटन प्रभावित हो रहा है।
- **म्यांमार मुद्दे पर भिन्न दृष्टिकोण:**

- म्यांमार के संबंध में भारत और इंडोनेशिया के विचार अलग-अलग हैं, विशेषकर राजनीतिक संकट और मानवाधिकार मुद्दों के संबंध में।

भविष्य की कार्यवाही

- **आर्थिक संबंधों को मजबूत करना:**
  - पाम ऑयल और कोयला जैसी वस्तुओं के अलावा व्यापार में विविधता लाने पर अधिक ध्यान दिया जाएगा, ताकि इसमें प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढांचे और नवीकरणीय ऊर्जा को भी शामिल किया जा सके।
  - व्यापार और पर्यटन को सुविधाजनक बनाने के लिए दोनों देशों के बीच संपर्क बढ़ाना।
- **समुद्री एवं रक्षा सहयोग में वृद्धि:**
  - **हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री डकैती से निपटने** के लिए समुद्री सुरक्षा में सहयोग का विस्तार करना।
- **क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाना:**
  - **आईपीओआई और हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए)** जैसे ढांचे के तहत ऑस्ट्रेलिया और जापान के साथ त्रिपक्षीय साझेदारी को मजबूत करना।
- **बहुपक्षीय सहभागिता को बढ़ावा देना:**
  - आर्थिक सुधार और जलवायु परिवर्तन जैसी साझा चिंताओं को दूर करने के लिए ब्रिक्स को एक मंच के रूप में उपयोग करें।
  - क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने के लिए इंडोनेशिया को बिम्सटेक में शामिल करने की वकालत की।
- **मजबूत राजनीतिक संबंध बनाना:**
  - पिछली यात्राओं और बहुपक्षीय संबंधों से उत्पन्न सद्भावना के आधार पर मजबूत संबंध विकसित करना।
  - प्रमुख क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर समन्वय सुनिश्चित करने के लिए मजबूत विदेश मंत्रिस्तरीय परामर्श को बढ़ावा देना।
- **लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करना:**
  - आईटीईसी जैसी छात्रवृत्तियों के माध्यम से शैक्षिक आदान-प्रदान को बढ़ाना तथा द्विपक्षीय सहयोग में भारतीय प्रवासियों के योगदान को बढ़ावा देना।

स्रोत: Indian Express - Delhi & Jakarta
Indian Express- Beyond China Factor